

पद २७५

(रागः पिलु - तालः दीपचंदी)

मत बाजो मत बाजो मुरली कन्हैया । आग लगो तोरे मुरलीकु
सैया ॥१०॥ जमुनाके नीर तीर गौर्वें चरावे । बन्सी बजावे वोहि
कन्हैया ॥१॥ जद तेरे मुरलीकी धून सुनैय्यां । गृहद्वार मंदिर सून
दिखैय्या ॥२॥ मानिकके प्रभु नाथ कृष्णजी । काहेकुऐसी बन्सी
बजैय्या ॥३॥